संवाद

आज हर अभिभावक चाहता है कि उसका बच्चा पढ़े और जीवन में आगे बढ़े। इसी अपेक्षा के साथ अभिभावक अपने बच्चे का विद्यालय में दाखिला कराते हैं। लेकिन बच्चा जब पहली बार अपनी माँ व परिवार के सदस्यों से दूर विद्यालयी परिवेश में आता है, तब उसकी सबसे बड़ी समस्या होती है — विद्यालय में सामंजस्य स्थापित करना और इस समस्या का सामना करना उसके लिए बहुत मुश्किल होता है। लेख 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा में समायोजन काल का महत्त्व' बच्चों की इसी समस्या का हल प्रस्तुत करता है।

प्रारंभिक शिक्षा के संदर्भ में शिक्षण विधि एक महत्वपूर्ण विषय है। यह ज़रूरी है कि पूर्व प्राथमिक स्तर पर शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा बताए गए शिक्षण अधिगमों को प्रारंभिक शिक्षक व्यावहारिक रूप दें। शिक्षक बच्चों को अपनी समझ व साझेदारी तथा भिन्न-भिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से ज्ञान प्रदान कर सकते हैं। शिक्षकों का यह व्यावहारिक तरीका बच्चों के मन की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रहण करने की कला बच्चों में इतनी व्यापक होती है कि बच्चे अपने संपर्क में आने वाली हर घटना, वस्तु, दृश्य, व्यक्ति, मौसम, जल, जीवन और माटी से स्वयं को सहजता से न केवल जोड़ लेते हैं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को गतिशील भी करते हैं। हर बच्चा अपने अनुभव को प्रकट करना चाहता है और इस प्रकटीकरण के लिए 'बच्चों की रचनात्मकता को दिशा देती भित्ति पत्रिका' बिल्कुल उचित माध्यम और मंच प्रदान करती है।

अभिभावक अपने बच्चों को इसी विश्वास के साथ विद्यालय भेजते हैं कि उनके बच्चे सभ्य, सुसंस्कृत, आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर बनें और यह भी अपेक्षा करते हैं कि विद्यालय का वातावरण उन्हें मानसिक स्तर पर मज़बूत करेगा और उनके मनोबल में वृद्धि होगी। किंतु कई बार कुछ ऐसी घटनाएँ हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती हैं कि जिनसे विद्यालय प्रशासन एवं शिक्षा व्यवस्था तथा प्रबंधन पर विश्वास करना कठिन हो जाता है। लेख 'कितने सुरक्षित हैं हमारे नौनिहाल विद्यालयों में' हमें विद्यालयों में बच्चों को हो रही असुविधाओं एवं उनकी सुरक्षा से जुड़े सवालों को प्रस्तुत करता है। लेख 'पाठ्यक्रम में भाषा — भारतीय संदर्भ' यह दर्शाता है कि किसी भी स्तर अथवा कक्षा के पाठ्यक्रम में हिंदी विषय क्यों महत्वपूर्ण है। भाषा का अस्तित्व शून्य में विकसित नहीं होता। भाषा अन्य विषयों को साथ लेकर

चलती है। भाषा में बच्चे की समझ अच्छी है तो अन्य विषय सीखना उसके लिए सरल हो जाता है। लेख 'पेशेवर शिक्षक का बनना — एक सतत यात्रा' यह दर्शाता है कि शिक्षक को निरंतर अपनी क्षमता व ज्ञान को बढ़ाते रहना चाहिए, तभी वह अपने शिक्षण को बेहतर कर सकता है। एक पेशेवर के तौर पर शिक्षक की तैयारी अनुभव और प्रशिक्षण से आगे जाकर अपने अनुभवों, विचारों और कार्यों पर लगातार चिंतन, उनकी समीक्षा तथा चुनौतियों, असफलताओं और सफल कदमों से सीखने के सतत प्रयासों की माँग करती है अर्थात् पेशेवर के तौर पर स्थापित होने के लिए चिंतनशीलता (reflection) एक अनिवार्य शर्त के तौर पर उभरती है। इस अंक में अन्य भी रोचक लेख जैसे 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण-अधिगम विधियाँ', 'बच्चों में जानने और समझने संबंधी उपकरणों का विकास — एक विवेचन', 'ऐसे कम हो सकता है बस्ते का बोझ', 'भाषा विकास', 'निर्माण स्थलों पर घुमंतू पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र — एक पहल' और 'अध्यापक शिक्षा पर 'शिक्षा के अधिकार अधिनियम' का प्रभाव' शामिल हैं।

उम्मीद है यह अंक आपको पसंद आएगा। इस अंक से संबंधित यदि कोई सुझाव हों तो आप प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. को भेज सकते हैं।

अकादमिक संपादक